(ख) १९५७-५८ में अब तक यह धन राशि किन किन क्षेत्रों में कितने लड़के लड़कियों को दी गई है ;

(ग) १९५६-५७ में इन छात्रवृत्तियों को पाने वाले लड़के लड़कियों ने आगे किन किन विषयों का अध्ययन किया , और

(घ) ये छात्रवृत्तिया पाने वाले छात्र छात्राओं में से कितनों ने ऐसे विषयों का अध्ययन किया जिससे उन्हें कोयला खानों के काम की अच्छी योग्यता प्राप्त हो सके ?

श्रम और रोजगार तथा योजना मंत्री के संसदीय सचिव (श्री ल० ना० मिश्र) (क) अभी तक कोई रकम नहीं दी गई है। योजना जल्दी ही अमल में लाई जायेगी।

(ख) छात्रवृत्तिया विभिन्न राज्यों के कोयला क्षेत्रों के लिये निम्नलिखित रूप से निर्धारित की गई हैं

राज्य	सामान्य शिक्षा सम्बन्धी छात्र-वृत्तियों की संख्या	टेकनिकल शिक्षा सम्बन्धी छात्रवृत्तियों की संख्या
बिहार	२१	११
पश्चिमी बंगाल	८	३
मध्य प्रदेश	१०	४
बम्बई	१	—
उड़ीसा	२	१
आसाम	२	१
आंध्र प्रदेश	५	२
राजस्थान	१	—

(ग) तथा (घ). प्रश्न नहीं उठते क्योंकि अभी तक कोई छात्रवृत्ति नहीं दी गई है।

अम्बर चर्खे

१४०१. **श्री रा० रा० सिंह** : क्या वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) कताई बुनाई के पुराने तरीकों का इस्तेमाल करने वाले कुटिरवादी उद्योगों ने अम्बर चर्खे को किस हद तक अपनाया है;

(ख) साधारण चर्खों के स्थान पर अम्बर चर्खे को अपनाने में अब तक क्या प्रगति हुई है , और

(ग) कताई बुनाई का पेशा न करने वाले नये लोगों में अम्बर चर्खा कहां तक लोकप्रिय हो रहा है ?

उद्योग मंत्री (श्री मनुभाई शाह) : (क) खादी तथा ग्रामोद्योग कमीशन ने अक्तूबर १९५७ में एक सर्वेक्षण किया था जिसके अनुसार अम्बर चर्खे से सूत कातने वाले ३३,६१४ लोगों में से १ १ प्रतिशत जुलाहे परिवारों के थे।

(ख) प्रशिक्षण-शालाओं में भरती हुए ६३,००० कातने वालों के बारे में खादी तथा ग्रामोद्योग कमीशन को जो सूचनायें प्राप्त हुई हैं,उनसे पता चलता है कि इन कातने वालों में से २४,००० या लगभग ३८ प्रतिशत व्यक्ति पहले साधारण (किसान) चरखा प्रयोग करते थे।

(ग) खादी तथा ग्रामोद्योग कमीशन ने हाल में जो सर्वेक्षण किया था उसके अनुसार अम्बर चर्खे से सूत कातने वाले ३२,६०९ व्यक्तियों में से २१,१७० या लगभग ६४ प्रतिशत पहले कताई का पेशा न करने वाले नये व्यक्ति थे।